ISSN (Online): 2583-5777 पूर्वोत्तर प्रभा, वर्ष-2, अंक-2 (जुलाई-दिसंबर, 2022)

पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में कथा प्रस्तुतीकरण योजना

शिवम कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

ईमेल- jhas363@gmail.com

शोध सार : उपन्यास सामाजिक चित्रण और युगबोध की प्रखर चेतना के कारण एक सशक्त साहित्यिक विधा के रूप में उभरा है। हालाँकि हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में जितनी चर्चा उपन्यास के कथ्य को लेकर होती है, उतनी उसके संरचनात्मक रूप पर नहीं की जाती है। हिन्दी उपन्यास के संरचना पर बहुत कम व्यवस्थित आलोचना उपलब्ध है। किसी भी उपन्यासकार के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उपन्यास का कथ्य पाठकों तक किस रूप में पहुँचाया जाए। यहीं से कथा प्रस्तुति के लिए उपयुक्त प्रविधि और शैली का उपयोग प्रारम्भ होता है। अतः उपन्यास की संरचनात्मक अध्ययन में कथा प्रस्तुतीकरण योजना का विश्लेषण आवश्यक है। राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में कथा-प्रस्तुति के लिए युगीन नवीन शैलियों और प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। इन प्रविधियों में मुख्यतः दृश्यात्मक और परिदृश्यात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। उनके उपन्यासों में कथा प्रस्तुति के लिए जिन प्रविधियों का प्रयोग किया गया है, प्रस्तुत आलेख में उसके सम्यक विवेचना का प्रयास हुआ है।

बीज शब्द : दृश्यात्मक प्रविधि, परिदृश्यात्मक प्रविधि, कथा प्रस्तुतीकरण योजना।

मूल आलेख

गद्य साहित्य में उपन्यास वह विधा है जिसमें लेखक कलात्मक रूप से अपेक्षाकृत अधिक उन्मुक्त होता है। यह उन्मुक्तता कथ्य से लेकर संरचनात्मक शिल्प तक विस्तृत है। किसी भी उपन्यास का कथ्य महत्त्वपूर्ण होता है। रचनाकार अपने भाव या विचार को कथ्य के द्वारा ही पाठकों तक रचना के माध्यम से सम्प्रेषित करता है। पाठकों तक यह सम्प्रेषण का रास्ता रचनाकार के द्वारा कहानी प्रस्तुत करने की प्रविधि से होकर जाती है। गोपाल राय के अनुसार 'उपन्यासकार की सबसे बड़ी समस्या यह है कि कहानी कैसे प्रस्तुत की जाये, वह किस प्रकार कही जाये कि इच्छित प्रभाव उत्पन्न हो सके; संकलित तथ्यों को किस तरह प्रदर्शित किया जाये कि वे उस अर्थ को ध्वनित कर सकें जो उपन्यासकार का अभीष्ट है। (राय, 2020, पृ.105)

प्रत्येक उपन्यासकार इसके लिए अलग-अलग प्रविधियों का प्रयोग करता है। राहुल सांकृत्यायन का रचना क्षेत्र उपन्यास, कहानी, यात्रा वृत्तान्त, नाटक, इतिहास और अन्य कथेतर विधाओं के साथ काफी विस्तृत है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखे गये उपन्यासों में ऐतिहासिक उपन्यासों की ही प्रमुखता है जिसका प्रभाव उनके द्वारा कथा प्रस्तुतीकरण प्रविधि पर भी पड़ा। हिन्दी उपन्यास में सामान्यतः कथा प्रस्तुति के लिए दृश्यात्मक और परिदृश्यात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। इन अवलोकन पद्धतियों के लिए अंग्रेजी के प्रसिद्द उपन्यास आलोचक पर्सी लब्बाक ने दृश्यात्मक और परिदृश्यात्मक की परिभाषा दी है। (राय, 2020, पृ.108)

दृश्यात्मक प्रविधि में लेखक पाठक के साथ उपस्थित होकर कथा प्रस्तुत करता है जबकि परिदृश्यात्मक प्रविधि में वह दूर होता है। उपन्यासकार इन दोनों प्रविधियों का एक ही उपन्यास में प्रयोग भी करता है। तत्त्वतः जब लेखक का जुड़ाव आत्म-तत्त्व के साथ अधिक होता है तब वह उपन्यास में सहजता से प्रवेश करता है वहीं जब लेखक नैरेटर की भूमिका निभाता है तब

वह स्वभावतः कथ्य से परे हट जाता है। राहुल सांकृत्यायन ने 'जय यौधेय' और 'सिंह सेनापति' दोनों ही उपन्यासों में इन दोनों प्रविधियों का मिश्रित प्रयोग किया है। राहुल संकृत्यायन के उपन्यास लेखन में दार्शनिकता और विचार का पुट सम्मिलित रहता है जिससे लेखक नायक के रूप में कथा कहते हुए भी उससे दूर चला जाता है ताकि आवश्यक विचारों के वर्णन को स्पेस मिल सके। सिंह सेनापति में 'दृश्यात्मक प्रविधि' का कुशल प्रयोग लेखक द्वारा किया गया है जिससे कथ्य ऐतिहासिक होते हुए भी पाठकों को साथ लिए आगे बढ़ सके। लेकिन कथा-प्रस्तुति की यह शैली 'जय यौधेय' में कमजोर पड़ जाती है। 'जय यौधेय' उपन्यास में दर्शन, राजनीति एवं धर्म सम्बन्धी कई विचार उपन्यास के नायक 'जय' के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है इसलिए इस कथ्य से बार-बार लेखक दूर जाता हुआ आभास होता है। इस उपन्यास की कमजोर कड़ियाँ भी जय का अन्य पात्रों जैसे वासंती, सिंह वर्मा, रोहण, अर्जुन, चन्द्रगुप्त आदि के साथ हुई बहसें ही हैं जिससे उपन्यास की कथा पीछे छूट जाती हुई प्रतीत होती है। 'दिवोदास' उपन्यास में परिदृश्यात्मक प्रविधि का ही प्रयोग हुआ है। इस उपन्यास में कथ्य के प्रवाह में कोई बाधा नहीं आती। परिदृश्यात्मक प्रविधि का सबसे गठित प्रयोग भी राहुल संकृत्यायन ने इसी उपन्यास में किया है जहाँ लेखक न तो कथ्य और न ही नैरेटर के रूप में पाठकों के सामने होता है।

'[दूसरे साथियों के] बाद मुझे आचार्य के सामने जाना पड़ा। आचार्य बहुलाश्व ने पूछा - 'तुम्हारा नाम-गोत्र, तात!'

'गोत्र काश्यप और नाम सिंह' कहते मैंने गैंडे की ढाल आचार्य के सामने रखी।' (सांकृत्यायन, 2019, पृ.13)

प्रस्तुत दृश्य के साथ ही 'सिंह सेनापति' उपन्यास का आरम्भ होता है। इस दृश्य से पहले राहुल सांकृत्यायन का आत्म वक्तव्य भी 'विषय प्रवेश' में वर्णित है जिसमें वह उपन्यास लिखने की प्रेरणा 'अपनी खुदाई द्वारा प्राप्त ईंटों पर उत्कीर्णित शब्दों को जोड़कर बने

आत्मकथा' को बतलाते हैं। हालाँकि 'विषय प्रवेश' में वर्णित सभी बातें औपन्यासिक हैं ऐतिहासिक नहीं। गोपाल राय ने इसे शिल्प की नवीनता के रूप में उल्लिखित किया है-

'शिल्प की दृष्टि से कथाप्रस्तुति में अप्रत्यक्षता का बोध पैदा करने के लिए राहुल जी ने 'सिंह सेनापति' में एक बिलकुल नया और अनोखा प्रयोग किया है।' (राय, 2019, पृ.188)

इस उपन्यास की कथा लगभग ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी का है। हो सकता है लेखक इस विषय प्रवेश के माध्यम से पाठकों को उस समय तक कथा सुनने की उत्सुकता जगा रहे हों। इस विषय प्रवेश के कारण ही लेखक उपन्यास में सीधे अपने परिचय से कहानी की शुरुआत करता है। इसका प्रकाशन सन् 1944 ई. में हुआ था। उस समय उपन्यास में उपन्यासकार की जगह मैं का प्रयोग शुरू हो गया था। इस उपन्यास में भी लेखक खुद के माध्यम से 'सिंह सेनापति' की कथा कहता है और जगह-जगह अन्य विषयों की व्याख्या भी करता है। कथाप्रस्तुति की यह नवीन शैली 'ऐतिहासिक यथार्थ' के लिए भावभूमि तैयार करता है।

इससे अलग 'जय यौधेय' में लेखक ज्यादा मुखर है तथा प्रथम दृश्य में वह पात्र के माध्यम से इसे प्रस्तुत करने के बजाय खुद पात्र पर हावी नजर आता है- "मेरी सबसे पुरानी स्मृति उस समय की है जबकि मैं चार-साढ़े चार वर्ष का था। लेकिन जिस उद्देश्य से मैं अपनी जीवनी को लिखकर छोड़ रहा हूँ, उसके लिए यह जरुरी है की मैं इसे अपने जन्म से तीन साल पहले की घटनाओं से शुरू करूँ।" (सांकृत्यायन, 2015, पृ.7)

लेखक की इस उपस्थिति में महत्त्वपूर्ण घटनाओं का भी जिक्र होता है जिसमें चन्द्रगुप्त द्वारा यौधेयों पर आक्रमण के साथ-साथ यौधेय गण की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का भी वर्णन है जिसे संभवतः गणों का अंतिम काल ही माना जा सकता है। इस उपन्यास में लेखक की उपस्थिति को खोजना नहीं पड़ता है। जय के बचपन से लेकर किशोर होने तक बराबर लेखक उसके साथ मौजूद नजर आता है। 'मैं' शैली का 'सिंह सेनापति' उपन्यास से कहीं विस्तृत और सुगठित प्रयोग राहुल सांकृत्यायन ने इस उपन्यास में किया है। इस उपन्यास में

चौथी सदी के भारत का चित्रण है। यौधेय गणराज्य के गौरव और ध्वंस दोनों का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। समुद्रगुप्त के शासन के बाद यौधेयगण का जिक्र कहीं नहीं आता है। यह उपन्यास उसी कथा को जय के माध्यम से वर्णित करता है। उपन्यास के नायक जय पर राहुल सांकृत्यायन के जीवन का भी कुछ प्रभाव नजर आता है जिसमें यायावरी और दर्शन सम्बन्धी बहसें शामिल हैं।

दिवोदास उपन्यास में कथा-कहन की सर्वश्रेष्ठ मानी जाने वाली शैली का प्रयोग राहुल सांकृत्यायन ने किया है जिसमें लेखक नेपथ्य में रहकर कथा कहता है और अपनी उपस्थिति से कहीं भी कथा के प्रवाह को भंग नहीं करता है। दिवोदास उपन्यास में ऋग्वेदकालीन कथा को आधार बनाया गया है। उपन्यास में 1220 ई. पू. से लेकर 1195 ई. पू. तक का काल भी दर्ज है। उपन्यास तत्कालीन समाज के समाज और भौगोलिक स्थिति को भी संज्ञान में लेता है। उपन्यास का नायक दिवोदास है। लेखक ने इस उपन्यास में कथा प्रस्तुति में कहीं भी हस्तक्षेप नहीं करने का प्रयास किया है। उपन्यास का आरम्भ कथा के पृष्ठभूमि के परिचय देने से होता है- “सप्तसिन्धु (पंजाब) की गर्मियां असहय होती हैं। वहाँ के शरद के बारे में वह बात नहीं कही जा सकती, लेकिन वह कड़ी जरूर होती है। लोग उसे बड़ा सुहावना मानते हैं। सप्तसिन्धु के आर्यों के पास जीवन के आनंद लेने के लिए समय की कमी नहीं थी। कृषि से उन्हें थोड़े से जौ पैदा करने की जरूरत थी जिसमें सत्तू, अपूप (रोटी) का काम चल जाय। उनकी असली जीविका पशुओं पर निर्भर करती थी।” (सांकृत्यायन, 2018, पृ. 1)

कथा-विस्तार उपन्यास शिल्प का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है जहाँ लेखक अपने उपन्यास के कथा या कथानकों को कितना विस्तार देना है और कब समेटना है, आदि बातों का निर्धारण करता है। राहुल सांकृत्यायन ने अपने उपन्यासों में कथा विस्तार के लिए कई बार पात्रों का प्रयोग किया हैं तो वहीं कई बार खुद प्रस्तुत होकर इस विस्तार में सहभागिता की हैं। दृश्यांकन की दृष्टि से दोनों ही शिल्प प्रचलित हैं। ‘सिंह सेनापति’ उपन्यास में राहुल जी ने कथा विस्तार

के लिए 'सिंह' के पूर्वगामी जीवन तथा उससे सम्बंधित ऐतिहासिक तथ्यों का प्रयोग बखूबी किया है। ऐतिहासिक उपन्यास होने के कारण उपन्यास में प्रयुक्त कथा विस्तार की यह शैली रुचिकर प्रतीत होती है। सिंह इस उपन्यास में सबसे पहले अपने बीते हुए जीवन को याद करता है जिससे यह प्रसंग आगे चलता है- " मैं कोशिश करूँगा, आचार्य! और वैशाली में जिस तरह अपने को मैं आचार्य महाली का योग्य शिष्य साबित करने में सफल हुआ था, वैसा ही यहाँ भी करूँगा।" (सांकृत्यायन, 2019, पृ. 13)

सिंह के इस कथन के साथ ही वैशाली और तक्षशिला के सम्बन्ध और पात्रों के परिचय प्राप्त होते हैं। 'सिंह सेनापति' उपन्यास में लेखक अपनी उपस्थिति को पाठकों के सामने नहीं आने देता है। अन्य दृश्यों में भी वह इसी तरह की सतर्कता बरतता है और नेपथ्य से कही हुई आवाज को पात्र के साथ जोड़ देता है- " मैं जीवन का पक्षपाती हूँ, जीवन पाषाणकूलों के बीच वेग से बहती महासिन्धु की धारा की भांति कल्लोल और कलरव के साथ अग्रसर होता है, जिसमें निरंतर हास, मान और आवेग है, किन्तु यहाँ जिस जीवन को मैं देख रहा था, वह गतिशुन्य, प्रशांत और अथाह समय था। दोनों जीवनों में कौन श्रेष्ठ है, इसका निर्णय करना उस समय मेरी शक्ति से बाहर की बात मालूम होती थी। तो भी कुछ भी सन्देह जरूर मेरे मन में पैदा होने लगा।" (सांकृत्यायन, 2019, पृ. 138)

जय यौधेय' उपन्यास में नायक जय के मार्फत ही कथा आगे बढ़ती है जिसमें जय और चन्द्र के बचपन का वर्णन तथा समकालीन राजनैतिक परिस्थितियों का भी जिक्र है। जय के वर्णनों में नैरेटर का रूप स्पष्ट नजर आता है। यात्रा इस उपन्यास का अभिन्न अंग है। जय जब अपने पिता के साथ तक्षशिला जाता है तब उनके बीच हुई बातचीत में भी लेखक की उपस्थिति नजर आती है। किसी भी उपन्यास के संवाद वही श्रेष्ठ होते हैं जिसमें रचनाकार द्वारा प्रस्तुत पात्र बोलें। यदि कहीं पात्र कमजोर होता है तब लेखक को स्वयं उस संवाद में भागीदारी करनी पड़ती है। राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों का शिल्प जटिल नहीं है। इसीलिए

संवाद भी सीधे पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किये गये हैं। जय यौधेय में उपन्यास का नायक यौधेय के समानांतर ही कहानी आगे बढ़ती है। दिवोदास उपन्यास में राहुल सांकृत्यायन ने अपेक्षाकृत सुगठित शैली का प्रयोग किया है जिसमें नैरेटर ही पूरे उपन्यास में कथा कहता है। दिवोदास उपन्यास का नायक है जिसके इर्द-गिर्द ही कहानी घूमती है परन्तु इस उपन्यास में लेखक की उपस्थिति कभी महसूस नहीं होती। सशक्त पात्र और अनावश्यक विचार-वर्णन से रहित होने के कारण इसे शिल्प की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में श्रेष्ठ माना जा सकता है।

कथाकार की एक समस्या यह भी होती है की किन पात्रों के साथ तादात्म्य स्थापित करे; अपने विचारों और सम्वेदनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों में से किन्हें वह भीतर से उद्घाटित करे। सम्भव है कि कोई उपन्यासकार ऐसा उपन्यास लिखे जिसमें सबकुछ उसके अवलोकन बिन्दु से ही प्रस्तुत किया जाये। पर व्यवहारतः ऐसा नहीं होता। उपन्यासकार कहीं न कही अपने पात्रों के निजी और प्रछन्न एकांत में अवश्य ही प्रवेश करता है और पाठक के सामने उसके मस्तिष्क को खोलकर रख देता है। (राय, 2020, पृ.114)

उपन्यास में कथा प्रस्तुति में पात्रों की भी अहम भूमिका होती है। लेखक उपन्यास में सामान्यतः किसी एक पात्र से खुद को जोड़ लेता है या किसी एक पात्र से उसकी गहरी सहानुभूति होती है। लेखक अक्सर अपने पसंदीदा पात्रों के पक्ष में ही उपन्यास में बोलता है। वह पात्र भी लेखक द्वारा कथा प्रस्तुति को प्रभावित करता है। राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास ऐतिहासिक हैं, अतः उसके शीर्षकों से ही यह विदित है की लेखक के रूप में उनका तादात्म्य किस पात्र के साथ होने वाला है। नायक के साथ उनका यह जुडाव नायक को प्रतिष्ठित करता है। सिंह सेनापति, जय यौधेय जैसे नायक भी उपन्यासों में एकतरफा प्रभाव डालते हैं। लेकिन राहुल सांकृत्यायन का झुकाव नारी पात्रों की ओर भी बना रहता है जिससे उनके उपन्यासों के

नारी पात्र वर्तमान पर्दा-प्रथा और भेदभाव का विरोध कर खुलकर जीने का समर्थन करते हुए नजर आती है।

'सिंह सेनापति' उपन्यास में सिंह जब तक्षशिला शिक्षा ग्रहण करने जाता है तब लेखक खुद उसे प्रेरित करता है कि वह अपनी पृष्ठभूमि पाठकों के सामने रखे जिससे लेखक को नैरेटर की भूमिका में उसका परिचय न देना पड़े। इस प्रकार लेखक 'दृश्यात्मक प्रविधि' का प्रयोग करके 'सिंह' के माध्यम से उसकी पूर्वकथा प्रस्तुत करता है। इस क्रम में 'सिंह' किसी प्रसंग के बारे में पहले जिक्र- भर करता है जिसके बाद उपन्यास के अन्य पात्र आचार्य बहुलाश्व और रोहिणी उससे उस प्रसंग के बारे में विस्तार से पूछते हैं। हालाँकि यह क्रम बस उपन्यास कथ्य के पृष्ठभूमि वर्णित करने तक ही चलता है। इस उपन्यास में दोनों प्रविधियों का मिश्रण भी कहीं-कहीं इतना सूक्ष्म है कि कई बार पाठकों की नजर उस पर नहीं पड़ती। "आचार्य के आदेश के बाद रोहिणी मेरे पास आ खड़ी हुई। मैं उसके साथ मूक हो चल पड़ा। आचार्य बहुलाश्व तक्षशिला गणतंत्र के एक समृद्ध और संभ्रांत व्यक्ति हैं। वह गण के प्रथम सेनापति रह चुके हैं। गण-संस्था (प्रजातंत्र सभा) में उनका बहुत प्रभाव है। उनका घर या महल सात खण्डों में विभक्त है। बाहरी खण्ड में घोडसाल की पंक्तियाँ हैं।" (सांकृत्यायन, 2019, पृ.17)

इस प्रसंग में पहले लेखक जो कथ्य के साथ खुद जुड़ा होता है वह धीरे-धीरे दूर हो जाता है। यह गमन अत्यंत सहजता के साथ होता है जिससे पाठकों को दृश्यात्मक प्रविधि से परिदृश्यात्मक प्रविधि में तब्दील होने का पता नहीं चल पाता। प्रथम वाक्य में उल्लिखित पात्र रोहिणी को लेखक उसी दृश्य तक रोककर खुद कथ्य को लेकर आगे बढ़ता है। यह लेखक के शिल्प की कुशलता है। 'जय यौधेय' उपन्यास में भी दोनों शैलियों का सम्मिलित प्रयोग है। जय के रूप में लेखक की उपस्थिति आत्मकथात्मक शैली के प्रयोग के कारण उपन्यास में नहीं खटकती है। हाँ, जब लेखक कथ्य से दूर जाकर आगे की घटनाओं को सम्बद्ध करने का प्रयास करता है तब वह खुद नेपथ्य से चित्र खींचता हुआ प्रतीत होता है।

"यमुना-गंगा का संगम है। एक ओर यमुना की नील धारा और दूसरी तरफ से आंपा गंगा की धारा मिल रही थी। दोनों के बीच में दूर तक श्वेत बालुका-राशि दिखलाई पड़ रही थी, जिसमें तपस्वियों की कितनी पर्ण-कुटियाँ बनी थीं।" (सांकृत्यायन, 2015, पृ.137) लेखक पाठक को दूर से उस चित्र की झलक दिखलाकर फिर वापस अपने कथ्य पर ले आता है। ऐसे शिल्प प्रसंगों का जय यौधेय उपन्यास में खूब प्रयोग मिलता है। इस उपन्यास के अंत में लेखक खुद उपस्थित होकर इस कथ्य को समेटकर यह कहते हुए समाप्त करता है कि 'आगे का वृत्तान्त लिखने के पहले लिखने वाला नहीं रह गया।' (सांकृत्यायन, 2015, पृ.190) अंत तक आते-आते यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि इस उपन्यास में लेखक ने कथा-प्रस्तुति में 'मैं' शैली का प्रयोग बस उस ऐतिहासिक परिवेश से जुड़ने के लिए किया है। पात्र 'जय' के साथ रहकर ही वह अपने धर्म,दर्शन तथा समाज सम्बन्धी विचारों को पुष्ट कर पाया। राहुल सांकृत्यायन द्वारा उपन्यास में यह प्रयोग भी तत्कालीन समय के अनुसार नवीन ही है। दिवोदास उपन्यास में दिवोदास ही उपन्यास का नायक है परन्तु इस उपन्यास में लेखक ने किसी पात्र के साथ अपनी तादात्मयता स्थापित नहीं की है। उपन्यास के आरम्भिक दृश्य-वर्णनों में त्रसदस्यु कई जगह मुख्य पात्र प्रतीत होता है परन्तु प्रसंग बदलते ही उसकी उपस्थिति भी क्षीणतर होती जाती है। चूँकि इस उपन्यास में लेखक विशुद्ध नैरेटर की भूमिका में रहता है अतः इस उपन्यास में परिदृश्यात्मक प्रविधि सशक्त है। ऋग्वैदिक काल के कथ्य को प्रस्तुत करने में कथा प्रस्तुति की प्रविधि अधिक उपयुक्त सिद्ध हुई है। परिवेश के चित्रण में भी लेखक खुद को दूर रख, पाठकों के लिए एक शानदार चित्र प्रस्तुत करता हुआ मालूम होता है।

"इसी समय ग्राम की ओर कोलाहल सुनाई दिया। दिवोदास अपने मित्रों के साथ अरण्य में एक आम्रवृक्ष के नीचे बैठा था। आम में आँवले भर के हरे-हरे फल पत्तों से भी अधिक और अधिकतर गुच्छे (घवद) के रूप में थे। यही चर्चा चल रही थी कि अब के साल हमारे जंगलों में आम के फल को कोई नहीं पूछेगा। मनुष्य ने अभी फलों के आकार और मिठास को बढ़ने का काम अपने हाथ में नहीं लिया था।" (सांकृत्यायन, 2018, पृ.39) इस दृश्य में नैरेटर कथा

प्रस्तुत करता हुआ आगे बढ़ता नजर आता है। प्रथम तीन पक्तियों में वह अपनी भूमिका बखूबी निभा लेता है परन्तु अंतिम पंक्ति पर यदि हम गौर से विचार करें तो पायेंगे कि नैरेटर उस काल से परे है जिसमें उपन्यास की रचना की जा रही है। उसे जानकारी है कि फलों के आकर और मिठास बढ़ाने वाले रसायन की खोज हो गई है और उसका प्रयोग भी किया जा रहा है। अगर लेखक यहाँ अपनी उपस्थिति जाहिर नहीं करता तब यह परिदृश्यात्मक प्रविधि का एक शानदार उदहारण होता। हालाँकि इसके अतिरिक्त लेखक ने उपन्यास में खुद को प्रदर्शित करने से बचाया ही है।

राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में शिल्पगत जटिलता नहीं है। कथा प्रस्तुतीकरण में उन्होंने दृश्यात्मक और परिदृश्यात्मक दोनों ही प्रविधियों का एकल और मिश्रित प्रयोग प्रमुखता के साथ किया है। कुछ दृश्यों में लेखक की उपस्थिति उपन्यास के प्रवाह को भंग करती है। ऐतिहासिक उपन्यास होने के कारण इन उपन्यासों में इतिहास और उससे संबंधित तथ्यों की सूचना देने हेतु लेखक को पात्र के आगे रहना होता है, जो स्पष्ट प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

सांकृत्यायन, राहुल. (2019). *सिंह सेनापति.* इलाहाबाद: किताब महल.

सांकृत्यायन, राहुल. (2015). *जय यौधेय.* इलाहाबाद: किताब महल.

सांकृत्यायन, राहुल. (2018). *दिवोदास.* इलाहाबाद: किताब महल.

राय, गोपाल. (2020). *उपन्यास की संरचना.* नई दिल्ली: राजकमल.

राय, गोपाल. (2019). *हिन्दी उपन्यास का इतिहास.* नई दिल्ली: राजकमल.